मासिक –

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डॉ० परस राम अग्रवाल

वर्ष 10	शनिवार 10 सितम्बर, 1983	संख्या 5

सत्संग हज़ूर परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर 28. 4. 74

सच्चाई या सत्यता

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी ।
मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी ।।
मंगलम् दीन बंधु, दीन नाथ दाता ।
मंगलम् अभेद भेद, आनन्द घन त्राता ।।
महिमा अनन्त आदि, अन्त कौन गावे ।
भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनाये ।।
सन्त भेस प्रगट जगत, जीव को चिताया ।
काल कर्म फन्द काट, धुर ले पहुँचाया ।।
प्रथम तत्व निज स्वरूप, पद कमल नमामी ।
गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूँ राधास्वामी ।।

राधास्वामी !

आप लोग आये हैं, मेरा जीवन सारा तलाश में गुजरा है; सुरत कुछ चाहती है, पता नहीं

लगता ! यह शब्द पढ़ा गया, वह कहते हैं तू अलख है; तू अगम है, तू अनाम है, तू शब्द है, तू अशब्द रूप है, तेरा भेद कोई नहीं जान सकता। यही शब्द तुमने सुना है नां ! बहुत अच्छा ! नहीं जान सकता, फिर वह क्या कहते हैं ? तू सन्त रूप में प्रकट हुआ, जीवों को चिताया और धुर पद पहुँचा दिया। एक तरफ़ तो वह कहते हैं कि उसका कोई अन्त नहीं मिलता। तुमने शब्द सुना है कि नहीं सुना ? एक तरफ़ तो वह कहते हैं कि वह बेअन्त है, उसका कोई पता नहीं लगता, दूसरी तरफ़ कहते हैं कि वह सन्त रूप में प्रकट हुआ उसने जीवों को चिता करके कहाँ पहुँचा दिया ? धुरपद पहुँचा दिया। और धुर पद को क्या कहते हैं :-

प्रथम तत्व निज स्वरूप।

वह कहते हैं वह जो पहला तत्त्व है वह तुम्हारा अपना ही स्वरूप है। अब इस अपने स्वरूप को ढूँढने के लिए मेरी ज़िन्दगी लग गई; मैंने सब पापड़ बेले। उसका पता तो मुझे लगा मगर ठहरा नहीं जाता। निज स्वरूप का पता तो

लग गया ! मगर ठहरा नहीं जाता !! यह पता कैसे लगा ? सिर्फ़ सत्य-प्रिय होने के नाते। कबीर साहिब की वाणी है :—

साईं आगे साँच हो, साईं साँच सुहाय।
भावें लम्बे केस कर, भावें घोट मुँडाय ।।

चितवनी यही है नां ! कि भई सच्चाई से चल। कबीर साहिब कहते हैं भई ! मालिक के आगे सच्चा होके चल, वहाँ स्वाँग की जरूरत नहीं। अब मैं सोचता हूँ वह सच्चाई क्या है ? उमर मेरी गुज़र गई, तजुर्बा क्या बताता है ? अगर तुम दुनिया में रहकर बिलकुल सच बोलो, तुम्हारा गुज़ारा हो सकता है ? अमली ज़िन्दगी का सबूत है; मैं नाककटों में शामिल नहीं हुआ ! ज़िन्दगी का तजुर्बा मुझे बताता है कि अगर तुम इस दुनिया में रहते हुए बिलकुल सच्चाई से काम करो; अगर सच बोलने का नाम साँच है तो यह असम्भव है। अगर सच बोलोगे दुनिया तुमको नहीं छोड़ेगी, तुम रह नहीं सकते अमली ज़िन्दगी में ! क्यों मास्टर साहिब, ठीक है या झूठ

है, बताओ ? फिर वह साँच क्या है जिससे हमको मालिक मिल जाय ?

पहला साँच तो यह है कि अपनी ज़ाती गरज़ के लिए तुम कोई हेराफेरी न करो, किसी को धोखा मत दो, किसी के साथ झूठ न बोलो; यह तो इन्सान कर सकता है ! मगर अगर तुम यह चाहो कि दुनिया में रह कर के दुनियादारों के पर्दे फ़ाश करते (उघाड़ते) रहो तो तुम ज़िन्दा नहीं रह सकते इस दुनिया में। अपने लिए तुम अगर चाहो कर सकते हो; मैंने अपने लिए किया। क्योंकि मैंने साँच को अपनाया है; अपने ज़ाती मान, ज़ाती इज्ज़त, ज़ाती ग़रज़ के लिए मैंने बचपन से कभी झूठ नहीं बोला, अपनी जान के लिए ! बाकी बच्चों के साथ खेलता हूं, झूठ, सच बोलता रहता हूँ, मखौल करता रहता हूँ। नहीं समझ में आती है ! अपने मेरे मातहत थे उनको बचाने के लिए मैंने बहुतेरा झूठ बोला ताकि व बच जायें, मगर अपनी ज़ात के लिए मैंने नहीं किया।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जब आप लोगों ने सुनाया कि जाग्रत अवस्था में, जागते हुए, आँखें खुली हुई, मेरा रूप प्रकट होकर तुम्हारी मदद करता है (अन्तर में, स्वप्न में या अभ्यास में तो इतने चमत्कार हैं जो लोग बताते हैं जिनका कोई हिसाब ही नहीं है) और मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ क्यों फकीर चन्द ! क्या तुझे पता है ? कान को हाथ लगाता हूँ, मैं नहीं जानता, मुझे नहीं पता होता। क्योंकि मैंने साँच को अपनाया है, तो इससे कहाँ पहुँचा मैं ? मैं उस मालिक को मिलने निकला था कि मेरा मालिक कहाँ है तो इन तजुर्बों ने मुझे यह यक़ीन करा दिया कि जो कुछ भी किसी के अन्तर जाग्रत में, स्वप्न में और सुषुप्ति में प्रकट होता है वह कौन है ? वह है हर शख़्स का अपना ही आत्मा या मन। ठीक है ? और सन्तमत के असूल के मुताबिक़ वह कौन है ? काल :—

काल ने रची त्रिलोकी सारी।
दयाल रचा सत्तलोक मँझारी ॥

ऐसी वाणी है :—

काल ने जगत अजब भरमाया, मैं क्या क्या करूँ बखान।

ऐसे-ऐसे स्वामी जी के शब्द हैं। मुझे इस असलियत का पता आप लोगों से मिला। उस निज स्वरूप का पता या उस मालिक के घर का पता मुझको किसने दिया ? दाता दयाल ने संस्कार दिया मगर पता नहीं लगा; पता आप लोगों के तज़ुर्बों से लगा।

तो अब मुझे यक़ीन हो गया कि जितनी भी हमारी रक्षा होती है यह रक्षा करने वाला कौन है ? फ़क़ीर चन्द नहीं ! बाबा सावन सिंह नहीं ! महर्षि जी नहीं ! राम नहीं ! कृष्ण नहीं ! यह रक्षा करने वाला तुम्हारा अपना मन है। और बरसरे ऐलान कहता हूँ कि मैं इस ज़माने में सन्त सत्तगुरु वक़्त हूँ या ये शब्द अहंकार के हैं, मेरे दिमाग़ को इस ज़माने में, इस वक़्त में वह जो परमतत्त्व आधार है, अकाल पुरुष या उसको अनामी कह लो या ज़ात या अल्ला कह लो या राम कह लो उसने मेरे दिमाग़ को हिलाया हैं। क्यों हिलाया ? कि इस सत्यता को घोषणा कर जाऊँ कि सच्चाई यह है। ऐ इन्सान ! तुमको इस दुनिया में जो कुछ मिलता है, मिले।

यह तुम्हारे अपने ही ख्याल, विश्वास, यक़ीन, नीयत और प्रेम और मुहब्बत का फल मिलता है। समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा ?

तो जब ये तजुर्बे मेरी जिन्दगी के सामने आये, मैं मजबूर हो रहा हूँ उस मालिक को ढूँढ़ने के लिए क्योंकि यह तो मुझे यक़ीन हो गया कि जो कुछ किसी के अन्दर प्रकट होता है यह उसका अपना ही विश्वास है, श्रद्धा है और यक़ीन है। तो जो शख्स इस सच्चाई को ग्रहण करके, अपने आप को जो असल में हमारे अन्तर फ़क़ीर चन्द है या असल में परसराम है या करतार की माई है वह जब इस मन के तबके को छोड़ के ऊपर जायेगी; रूप, रंग, रेखाओं, को छोड़ जायेगी, काल चौदह लोक में बसता है, सहस्रदल कमल काल माया में, त्रिकुटी काल और माया में, शून्य, महाशून्य काल और माया में, सोहंग काल की चोटी पर है, वह तुम हो, तुम्हारी अपनी ही आत्मा है, तुम्हारा मन है, तो जब तक कोई आदमी इससे परे नहीं जायेगा वह इस चक्कर से नहीं बच सकता। समझ गये ! तो कबीर साहिब कहते हैं :—

साईं आगे साँच हो, साईं साँच सुहाय।
भावें लम्बे केसकर, भावें घाट मुँडाय ।।

तो जो शख़्स अपनी ज़ात को, उस मालिक को या अपने आद घर को या अपने आपको जानना चाहते हैं उनके लिए क्या ज़रूरी है ? कि अपनी ज़मीर को हमेशा साफ़ रखें। अपनी ज़ाती ग़रज़ के लिए किसी को दुःख न दें, किसी के साथ फ़रेब न करें, किसी के साथ धोखा व चारसौबीस न करें। अब मैं कई दफ़ा सोचता हूँ इस वक्त जितने मज़हब हैं, जितनी ये गद्दियाँ हैं, ये पन्थ हैं, तुम बताओ किसी ने इस सच्चाई के साथ दुनिया में व्यवहार किया है ? वह तो credit लेते हैं इन बातों का और इन्हीं बातों से ये डेरे बन गये। जितनी जगह मठ बने हुए हैं, चिन्तपूरनी, बालकनाथ, हरिद्वार ये क्या सच्चाई से बने हैं ? ये झूठ से बने हैं। यहाँ के रहने वाले, यहाँ से ताल्लुक (सम्बन्ध) पैदा करने वाले कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वे अपने घर पहुँचेंगे। नहीं जा सकते, क्योंकि वहाँ साँच नहीं है। तुम स्वयं बताओ इन बातों का हम गुरुओं ने credit लेकर, पर्दे में रखकर

हमारी जायदादें लूटी हैं, हम से नाक रगड़ाये हैं, हमसे मत्थे टिकाये हैं। वहाँ तक तो खैरियत थी ! कोई बात नहीं थी ! उसका नतीजा क्या निकला ? कि हमारी इन्सानी नसल भिन्न-२ मज़हबों में, भिन्न-२ पन्थों में, भिन्न-२ गद्दियों में, भिन्न-२ डेरों में बँट गई और हमारे अन्तर तअस्सुब (पक्षपात) आ गया ! हम एक दूसरे को बुरा समझने लग गये ; यह सिक्ख हैं, यह मुसलमान हैं, यह यहूदी हैं, यह ब्यास का रहने वाला है; यह सावन आश्रम का है, यह स्वामीबाग का है, यह निरंकारी है, यह ब्रह्मकुमारियों का है। चूँकि हमारा प्रेम नहीं है, हमारी मोहब्बत नहीं है, हम आपस में नफ़रत करते हैं इसलिए मैं इस संसार में सन्तों के मार्ग की तालीम को साफ़ करने के लिए इस फ़क़ीर के चोले में आया हुआ हूँ। मगर मेरी क़दर कौन करता है ! तुम क़दर करते हो ?

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ।।

कैसे आप है ? जो शख्स सत्यता से चलता है तो जो कुछ भी वह अपने मन से निकलता हुआ

देखता है वह तो है झूठ जिस तरह आप लोग कहते हैं कि मैंने फ़लानी जगह आप की मदद की, अब मैं तो था नहीं ! वह उसका अपना ही आत्मा था। था या कि नहीं था ? तो जो आदमी इस तरीके से अपने मन से निकल कर ऊपर चला जायेगा, वह क्या हो जायेगा ? वह परमतत्त्व हो जायेगा। ऊपर के शब्द में आया था नां ! "प्रथम तत्व निज स्वरूप" यही कहा था नां ! तो सन्त दुनिया में आकर जीव को चिताते हैं, धुर पद पहुँचाते हैं। किस धुर पद में पहुँचाते हैं ? अपनी ज़ात में पहुँचा देते हैं। हम, तुम, सब उस मालिक की अंश हैं, अर्थात् हमारी जो सुरत है। वह कब अपने घर जायेगी ? जब वह सच्चाई से चलेगी। मैंने आपको पहले बोला कि तुम दुनिया में रहते हो, जो शख्स इस दुनिया में रहता हुआ ग़लत सच्चाई को अख़्तयार (ग्रहण) करता है, नहीं समझ में आती है ! सिर्फ़ कहे कि मैं सच ही बोलूंगा, किसी हद तक वह ठीक है मगर ऐसा सच बोलना जिससे किसी का नुक़्सान हो जाये गुनाह है। एक निर्दोष आदमी को जिस पर झूठा मुकद्दमा कराया हुआ हो उसको झूठ बोलकर बचा देना यह पुण्य है, पाप नहीं है। नहीं

समझ में आती है ? सवाल सब नीयत का है असली सच्चाई जो सन्तमत की है यह है जो मैंने अब बताई है :—

साँचे कोइ न पतीजई, झूठे जग पतिआय ।
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय ।।

जहाँ गुरुओं का, महात्माओं का, मज़हबों का झूठा प्रोपेगण्डा है वहाँ लाखों आदमी जाते हैं ! अब कुम्भ का मौक़ा था, था या कि नहीं था ? चार-चार, पाँच-पाँच लाख आदमी वहाँ गया । क्या कुम्भ में नहाने से आदमी घर पहुँच सकता है ? सोचो मेरी बात को ! अगर मैं पर्दा रखता तो ऐसी घटनाएँ (करिश्मे) जो लोगों के अन्तर होती हैं जितना चाहे मैं उनसे धन ले लेता, अब मुझे कौन देगा ! कोई नहीं देता । अब कोई नहीं देता ! शराब है, पैसे भी खर्च करने पड़ते हैं और पी के मदमस्त होते हैं । किसी की बहिन, बेटी को नहीं देखते, गाली निकालते हो, दिमाग़ ख़राब हो जाता है, उसके हासिल करने के लिए क़तारें लगी हुई होती हैं और दूध गली-गली में बिकता है ; उसकी कोई क़दर है ? मैं वह मोती

बिखेरता हूँ, वह सच्चाई दुनिया को बयान करता हूँ जिसकी दुनिया कोई क़दर नहीं करती, कोई value नहीं ! झूठ बोला ? कबीर साहिब भी कहते हैं :—

साँचे कोई न पतीजई, झूठे जग पतिआय ।
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय ।।

झूठ ही है नां ! कोई कहता है मेरे अन्दर राम प्रकट हुआ, कोई कहता है मेरे अन्दर कृष्ण प्रकट हुआ, कोई कहता है मेरे अन्दर देवी प्रकट हुई, कोई कहता है मेरे अन्दर बाबा फ़क़ीर प्रकट हुआ, झूठ नहीं है ? वहाँ उसकी इज़्ज़त है । डेरों में जाओ, मन्दिरों में जाओ, मस्जिदों में जाओ, क्या हो रहा है दुनिया के अन्दर ! यह है सच्चाई का हाल :—

साँच कहूँ तो मारसी, यह तुरकानी जोर ।
बात कहूँ परलोक की, कर गह पकड़े चोर ।।

कबीर साहिब ने भी साफ़ सत्य नहीं कहा लफ़्जों में ! वह कहते हैं अगर मैं सच कहूंगा, यहाँ तुर्कों व मुसलमानों का ज़ोर है ये मारेंगे मुझे ! ठीक है कि नहीं ? अब मुसलमान हैं, मक्के को मानते हैं क्या मक्का उनकी मग़फ़रत (कल्याण) करता है ?

मगर अगर कबीर यह कह देता तो फिर क्या होता ? क्या होता ! मारते दुनिया के आदमी। ठीक है कि झूठ है ? चूँकि सन्तमत की तालीम जब पहले, कबीर साहिब के ज़माने में शुरू की गई थी वह बचपन था, अब इस सच्चाई की ज़रूरत है, मैं आया हूँ अवतार लेकर; सन्त सत्तगुरु वक़्त प्रकट हुआ हूँ संसार में। क्यों ? इस वक़्त अपना राज्य है। इसवास्ते इस वक़्त इस सच्चाई की जो मैं बयान कर रहा हूँ इसकी ज़रूरत है। हर चीज़ समय के मुताबिक़ होती है। देखो ! कबीर साहिब ने कहा कि नहीं कहा :—

साँच कहूँ तो मारसी, यह तुरकानी जोर।
बात कहूँ परलोक की, कर गह पकड़े चोर॥

कहते हैं मैं बात परलोक की कहता हूँ, सच कहूँगा तो मुझे मारेंगे ; जिस तरह चोर को पकड़ लेते हैं इस तरह मुझे पकड़ लेंगे। और यही भेद व सच्चाई कबीर साहिब ने धर्मदास को बता दी मगर उसके मुँह में गुल्ला ठोंक दिया :—

धर्मदास तोहे लाख दोहाई।
सारभेद बाहर नहीं जाई॥

क्योंकि अगर उस वक़्त यह सारा भेद दिया जाता तो मज़हबी राज्य था नां ! तुर्कों का राज्य था। फिर स्वामी जी आये, उन्होंने भी यही कहा :—

सन्त बिना कोई भेद न जाने ।
पर वह तोहे कहें अलग मैं ।।

सन्त के बिना कोई भेद नहीं जानता मगर वह तुझको अलहदगी में कहेंगे। क्योंकि पिछले ज़माने में सन्तमत की तालीम की सत्यता का आम प्रचार नहीं था, सिवाय किसी ख़ास-२ आदमी के और जिनको बताया उन्होंने अपनी गद्दियाँ बना लीं। तुम देखो ! ये गद्दियों वाले करते क्या हैं ? इन्हीं जीवों के अज्ञान का अनुचित लाभ उठा करके, इन्होंने अपने मठ व डेरे बना लिये, वहाँ धडाधड़ रुपया जाता है। अब यहाँ कौन देता है ! तुम ही आते हो, बताओ तुम क्या देते हो यहाँ ? तुम ही बताओ क्या सेवा करते हो मेरी ? मुझे तो खैर सेवा की कोई ज़रूरत नहीं, मालिक का दिया हुआ बहुत है, कौन देता है, मुझे बताओ तो सही ? इसवास्ते इस तालीम की अब ज़रूरत है। जब तक इस सत्यता का मानव जाति को इल्म नहीं

होगा कि ऐ इन्सान ! तुमको जो कुछ मिलता है यह तेरी अपनी नीयत, तेरा अपना कर्म, तेरा अपना विश्वास और तेरी अपनी श्रद्धा है, जब तक यह दिमाग़ में नहीं बैठेगा उसका कल्याण नहीं । अब तुम देखो इस वक़्त क्या हो रहा है ! हड़तालें हो रही हैं, घेराव हो रहे हैं, पब्लिक Property को नुक़सान पहुँचाया जा रहा है, कोई ब्रांच इस इन्सानी नसल में ऐसी नहीं जो strike नहीं करती । एक strtke बाक़ी रह गई अगर वह हो जाये, तो मेरे ख़्याल में दुनिया ही ख़त्म हो जाये, औरतें strike कर दें कि हम बच्चे पैदा नहीं करेंगी, मर्द करे, बस ! ख़ात्मा हो जाये । तुम सोचो मेरी बात को मैं क्या कह रहा हूँ ! मैं आया हूँ दुनिया में, मेरे नाम मेरे दाता का हुक्म है :—

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही ।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही ।।

मैं परम दयाल हूँ । सच्चाई बयान करता हूँ मगर इस सच्चाई को सुनने वाले तुम हो कहाँ ! क्या तुम सच्चाई को सुनने के लिए तैयार हो ? इस

सच्चाई का यह रूप जो मैंने बताया है यह तो है रूहानियत का, दुनिया की सच्चाई क्या है ?

हम जिस गृहस्थ में रहते हैं, मेरे पास नौजवान लड़के आते हैं, बीमार होते हैं। आया हुआ है एक लड़का, बीमार है। बचपन में ब्रह्मचर्य खोते हैं अपने हाथों से, लड़कियाँ अपने ख्यालात से कोई चपटी खेलती हैं, कोई कुछ करती हैं। जब उस वक्त तो थोड़ा सा एक Lust का आनन्द लेते हैं, पीछे से क्या होता है ? किसी का जिगर ख़राब हो गया, किसी का दिमाग़ ख़राब हो गया, किसी की memory फ़ेल हो गई। इस दुनिया की सच्चाई बता रहा हूँ ! दुनिया की सच्चाई क्या है ? अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य को पालो। यह मेरा तजुर्बा है, ज़िन्दगी का अनुभव है। कल आगरे से कार में दो औरतें आई थीं। उनके साथ एक नौजवान लड़का था। कहता है बाबा जी ! बीमार रहता हूँ, डाक्टर कहते हैं प्लूरिसि हुई हुई है, यह हुआ हुआ है, यह हुआ हुआ है। मैंने कहा अपना ब्रह्मचर्य नष्ट नहीं करता ? करता हूँ ! तो मैंने कहा फिर प्लूरिसि

तुमको न हो तो किसको हो ! प्लूरिसि, अगर बीमारी तुमको न हो तो किसको हो ? इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं, जहाँ रूहानियत की तालीम देता हूँ वहाँ यह कहना चाहता हूँ, ऐ अपने बच्चों के मां बाप ! अपने बच्चों के character (चरित्र) का ख्याल रखो।

आप स्कूल मास्टर हैं, आपको क्या ड्यूटी है ? सिर्फ़ यूपी-अप, अप मायने ऊपर, यही सिखाने की आपकी ड्यूटी है ? आपकी ड्यूटी है बच्चे को इखलाक़ बताना। अगर ये स्कूल मास्टर जो हैं अगर यही मेरी बात को समझ जायें तो ये बड़ा परोपकार कर सकते हैं। मगर ये उपकार कैसे करेंगे ! मेरे पास बड़े-बड़े टीचरों की चिट्ठियाँ आती हैं जो स्कूल मास्टर हैं, जिन्होंने अपने ब्रह्मचर्य बुरी तरह मे खोये हुए हैं। बुरी तरह मे खोये हुए हैं ! एक घमाणा के साथ कोई गाँव था, वहाँ कोई लड़का था। उसने लिखा बाबा जी ! नौकरी नहीं मिलती, मैं बड़ा दु:खी हूँ, घरवाले बड़ा तंग करते हैं, दु:खी हूँ ! दु:खी हूँ ! दु:खी हूं ! मैंने कहा अच्छा ! फ़िकर मत करो नौकरी मिल

जायेगी, अब उसको, महोने के अन्दर Girl's School में नौकरी मिल गई। दो महीने बाद उसका पत्र आया, महाराज ! वहाँ एक लड़की है, वह मेरे से शादी करना चाहती है। उसके मां-बाप नहीं मानते, मेरे मां-बाप नहीं मानते। वह कहती है तेरे साथ ही शादी करूंगी, नहीं तो मैं आत्महत्या करके मर जाऊंगी। अब अगर मैं उसके साथ शादी नहीं करता, वह मर गई तो उसका पाप किसको लगेगा? अब दुनियाँ के उस्तादों के चालचलन का यह हिसाब है ! हिन्दू शास्त्रों के अनुसार जो उस्ताद पढ़ाता है, वह जिनको पढ़ाता है, वह उसके बच्चे और बच्चियाँ होती हैं; लड़के और लड़कियों का उनका सम्बन्ध होता है। अब जो स्कूल मास्टर ही उस लड़की के साथ शादी करना चाहता है, जिसको वह पढ़ाता है, वह इन्सान का बच्चा है या गधे का बच्चा है। सोचो मेरी बात को ! एक, दुनिया की सच्चाई यह है।

दूसरी सच्चाई यह है कि अपनी जीविका के लिए किसी को तंग मत करो। तुम नौजवान बच्चे हो, तुम्हारे हाथ-पाँव तुम्हारे पास हैं, जवान हो गये। अब तुम आप तो कमाते नहीं, खुद तो मेहनत नहीं

करते और बाप पर या भाई पर तुम्हारा बोझ है। है कि नहीं ? तुम मुजरिम (दोषी) हो; तुम में सच्चाई कहाँ है ! जितना हमारी अशान्ति का कारण है वह सिर्फ यह है। परमार्थ एक और चीज़ है, दुनिया की बातों में सच्चाई की ज़रूरत है। दुनिया की सच्चाई क्या है ? अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करो; जहाँ तक हो सके अपना बोझ आप सम्भालो। अगर बचपन है और बात है। आजकल लड़के क्या करते हैं ! शादी होती है, इतने हज़ार रुपये लेंगे भई ! कार चाहिए रैफ्रिजरेटर चाहिए, टी. वी. चाहिए। यँ्ही किसी को कह दो, ओये ! तू औरत की कमाई खाता है !! तो उसको गुस्सा लगेगा। यह क्या औरत की कमाई नहीं है ? लड़की के बाप की कमाई है, समझे नां ! तुम औरत का सहारा लेकर के ससुराल से जायदाद चाहते हो, पैसे चाहते हो, दहेज चाहते हो। यह हिन्दुस्तान की ऐसी दुर्दशा हो रही है, घर-घर में यही मुसीबतें हैं, कोई सुखी नहीं है। क्यों सुखी नहीं है ? क्योंकि हमने उस सभ्यता को छोड़ दिया जिस सभ्यता से चलने पर हम अपनी ज़िन्दगी को बेहतर बना सकते हैं। समझ गये मेरी

बात को :—

झूठे को झूठा मिलें अधिका बढ़े स्नेह।
झूठे को साँचा मिले तब ही टूटे नेह ।।

मेरे पास कौन आता है ! मेरी सच्चाई को सुनकर कोई आता है तो मुझे बताओ ? बहुत कम आदमी आते हैं। "झूठे के साथ झूठा"—किसी गुरु का चेला है, वह कहता है आहा ! गुरु महाराज ने मेरा यह काम कर दिया। और दूसरे जो हैं, वे उसके साथ प्रेम करेंगे। झूठे को झूठा मिलता है और उसके साथ प्रेम करता है, यह कहते हैं, हम सत्संगी हैं आपस में प्रेम करते हैं, झूठ का व्यवहार नहीं तो है क्या ! कौन जाता है !! मैं हैरान हूँ कि अगर जो कुछ मैंने अनुभव किया है यह सत्य है तो पिछले महात्माओं ने जो कुछ भी किया, अपनी गर्दन पर पाप का बोझ लेके चले गये। ऐसी-वैसी जब बातें होती थीं नां, तो क्या होता था ? Loud speaker पर ले जाते थे, "सुनो भाई ! यह क्या कहता है।" कि एक मुर्ग़ा तो झूठ में फँसा हुआ है दूसरे भी सारे मुर्ग़ फँस जायें और एक झूठों का दायरा बन जाये ; नाककटों का दायरा बन जाये। दाता दयाल ने एक जगह नाककटों का क़िस्सा लिखा है। एक आदमी

का नाक कटा हुआ था। दूसरे ने पूछा तेरा नाक क्यों कटा ? उसने कहा मुझे ईश्वर मिल गया ; मैंने नाक कटाया था भगवान् के दर्शन हो गये। उसने कहा मुझे भी करा दो—कि नाक काट दी। जब नाक कट गया "अब किसी को कहना नहीं ! सब को यही बोलो मुझे मिल गया"। होते-होते जो भी आया नकटों में शामिल होता गया ; नाक कटा ली, कह दिया मुझे ईश्वर मिल गया। ऐसे ही हम लोग हैं, गुरु धारण कर लिया, "हमने गुरु धारण कर लिया ! हम पहुँच गये जी !" अब दूसरे भी वैसे ही जायेंगे। एक ने एक जगह से नाम लिया है बाक़ी को भी वह घेरघार के वहाँ जाके नाम दिलवा देगा। यह है क्या दुनिया ?

झूठे को झूठा मिले, अधिका बढ़े स्नेह।
झूठे को साँचा मिले, तभी टूटे नेह॥

मेरे साथ कौन प्यार करता है, बताओ ? ये पाँच-चार आदमी जो यहाँ रहते हैं ये मेरे साथ थोड़ा प्यार करते हैं। रोटी का सामान बना हुआ है, और क्या है ! यहाँ अगर मेरा लंगर लग जाये तो तुम देख लो यहाँ कितने आदमी इकट्ठे हो जायेंगे ! फिर रोज़गारी होता है ; बड़े-बड़े आदमी मेरे वाकिफ़ हों,

दूसरे आदमी जानके मेरे चेले बन जायेंगे। फिर कहेंगे बाबा जी! उसको कहो फलानी सिफ़ारिश मेरी कर दे, मेरा काम कर दे। यह होता है आजकल दुनिया के अन्दर :—

कबीर लज्जा लोक की, बोले नाहीं साँच।
जान बूझ कंचन तजे, क्यों तू पकड़े काँच ॥

कबीर साहिब कहते हैं लोक-लाज के वश में तुमसे सच नही कहा गया। मैंने लोक-लाज नहीं रखी। नहीं समझ में आती है! मैं तो मामवता मन्दिर की जड़ों में कुल्हाड़ी मार रहा हूं! मेरी इस साफबयानी से कौन देगा!। मगर मैं इसकी परवाह नहीं करता। मैं आज़माना चाहता हूं कि सच्चाई में कुछ ताक़त है या कि नहीं, बस! मैंने ज़िन्दगी में जितना काम किया सब सच्चाई से किया। मदरसे स्टेशन पर मैं स्टेशन मास्टर था वहाँ मैंने एक दुकान खोली थी। मेरा अपना नौकर था, सात चीज़ें रखता था। गाँव के लोग आते थे ले जाते थे। कभी हेरा-फेरी नहीं की। एक साल में मुझे ३५० मन पक्का नरमा (कपास) आया था। वे कपास दे जाते थे, सौदा ले जाते थे। नहीं समझ में आती है! कभी

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हेराफेरी नहीं की। मुझे तो सच्चाई ने बड़ा फल दिया। तकलीफ़ें मैंने बड़ी उठाईं ; कोई शक नहीं, मगर आज मैं सुखी हूँ। लड़का अढ़ाई हज़ार वेतन लेता है, लड़की अपनी जगह अच्छी है, मैं भी अपनी जगह पर बिलकुल सुखी हूँ, कोई तकलीफ़ नहीं है।

तो इसके मायने यह न समझना कि तुम दुनिया में बिलकुल सच बोलो ; तुम्हारा गुज़ारा नहीं चलेगा ; सिर्फ़ अपनी ज़ात के लिए झूठ न बोलो ; अपनी जान के लिए, बस ! बाकी दुनिया का व्यवहार तो चलता रहता है, इसके बग़ैर गुज़ारा नहीं है :—

साधू ऐसा चाहिये, साँची कहे बनाय ।

यह कहते हैं कि साधु ऐसा हो : अब मैं पूछता हूँ ये जितने महात्मा हैं जिनके रूप लोगों के अन्दर प्रकट होते हैं क्या ये सच कहते हैं Public को ? इस-वास्ते यह साधु नहीं सन्त तो रहा दरकिनार !, यह साधु भी नहीं है, नाहिं ; बिलकुल नहीं !! कबीर साहिब की ज़बानी कह रहा हूँ ! हैं या कि नहीं, यह तो मालिक जानता है, मुझे कोई दावा तो नहीं ! मगर कबीर साहिब तो कहते हैं :—

साधू ऐसा चाहिये, साँची कहे बनाय।
कै टूटे कै फिर जुड़े, बिन कहे भ्रम न जाय॥

मैंने तो सच्ची बात कहनी है। मन्दिर को भी पैसे की ज़रूरत है, जो चार पैसे मन्दिर को देना चाहो, दे दो अगर नहीं देना चाहो मत दो, ख्वाहे टुट्टे ख्वाहे जुड़े, बस! :—

साँचें शाप न लागई, साँचें काल न खाय।
साँचे को साँचा मिलै, साँचे माहिं समाय॥

यह! मुझे बेशक कोई महात्मा हो, कोई बदअसीस (बददुआ) देवे मुझे नहीं लगेगी, नांहि! मैं लोगों के पाप ले लेता हूँ, मुझे पाप नहीं असर करते! लोगों के पाप संकल्प करा के ले लेता हूँ, मुझे वह पाप नहीं लगते! कैसे लगेंगे? लोग कहते हैं गुरु नाम देता है उसके पाप ले लेता है। उस गुरु को तो पाप आयेंगे जो पर्दा रखता है! उस गुरु को तो पाप खायेंगे! जो पर्दा रखता है! क्योंकि सच्चा नहीं है। उसको तो दूसरे के पाप लेने पड़ेंगे। मुझे क्या? कुछ नहीं! :—

साँचे शाप न लागई, साँचे काल न खाय।
साँचे को साँचा मिलै, साँचे माहिं समाय॥

साँचे को काल नहीं खाता। काल क्या है? काल

है मन । नहीं समझ में आती है ! चूँकि तुम लोगों की बदौलत मुझे इस सच्चाई का इल्म हो गया इसवास्ते इस उमर में आप सत्संगियों को सेवा करता हूँ, आप सत्संगियों को अपना सच्चा सत्तगुरु मानता हूँ । दया तो दाता दयाल की है; मेरी समझ में यह बात आती नहीं थी, यह काम जो मुझे दिया था इसीलिए दिया था कि मुझे सच्चाई का पता लग जाये। तो, इसलिए मैं, यहाँ जो आदमी रहते हैं, उनकी सेवा करता हूँ, जिनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ है और मेरे रूप ने उनकी मदद की। सत्तगुरु समझ के सेवा करता हूँ, बस !

शिष्य निवे गुरु को, यह जाने सब कोय ।
गुरु निवे जो शिष्य को, वह विरला ही कोई होय ।।

मैं वह गुरु दुनिया में प्रकट हुआ हूँ जो चेलों को गुरु मान के नमस्कार करता है समझ गये ! पिछला वक्त गया ! उस वक्त पर्दे की जरूरत थी। मैं यह नहीं कहता कि उन्होंने ठीक किया या गलत किया। इस वक्त मुल्क में, हमारी घरेलू ज़िन्दगी में, हमारे परिवार की ज़िन्दगी में अगर शान्ति हो सकती है तो इस सत्यता की तालीम से हो सकती है जो मैं दे रहा

है और यही सन्तमत की तालीम का सारा सारांश है। इसी सत्यता के लिए कबीर साहिब का ज़हूर हुआ, इसी के लिए गुरु नानक साहिब आये, इसी के लिए यह और आये; सब ने बात को पर्दे में रखा और दुनिया के साथ सहमत हुए ताकि वह मुखालिफ़ न हो जायें उनके। नहीं समझ में आती है!

जाकी साँची सुरत है, ताका साँचा खेल।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, साईं सों है मेल ॥

मैंने जो परमार्थ की सच्चाई समझीं है वह भी बता दी और जो दुनिया की सच्चाई है आपको वह भी बता दी। तो परमार्थ की सच्चाई तो यह है कि मेरे अन्तर में जितने खेल पैदा होते हैं, जो नक्शे, जो कुछ भी पैदा होते हैं यह क्या है? यह माया है और यह काल है। बाक़ी जो कुछ रह जाता है वह क्या है? वह मालिक का अंश है। तो जिस को यह ज्ञान हो गया वह अपने आप को मालिक से जुदा समझता ही नहीं है :—

मन तू शुदो, तू मन शुदम।
न तू दीगरी, न मन दीगरम ॥

अर्थ :—मैं और नहीं, तू और नहीं। मगर वह

यह ढ़िंढोरा भी नहीं पिटाता। समझते हो नां ! वह उसका रूप हो जाता है। तो उसके रूप हो जाने की वजह से, मैं कई दफ़ा अपनी आत्मा से सोचा करता हूँ कि फ़कीरचन्द ! तू तो जाता नहीं, बात क्या है ? मेरी समझ में कुछ नहीं आया, सच्ची बात तो यह है ! सिवाय इस बात के कि मैं नहीं जाता, बस इतनी बात है ! क्या खेल है यह ? Theory है मेरे पास ; कोई सबूत मेरे पास नहीं हैं। तो मेरी समझ में यह आया है कि जो आदमी उसका रूप हो जाता है, उसकी रेडियेशन, उसका ध्यान, उस के ख्याल से यह हो सकता होगा कि दूसरे को फ़ायदा पहुँच जाता हो, क्योंकि मुझे याद है, एक बार मैंने एक Article (लेख) लिखा। उसमें मैंने मस्ती में आकर लिखा, भई ! तुम मेरा ध्यान करके देखो, तुमको तुम्हारी मनोकामनाएँ भी पूर्ण होनी चाहिएं ; तुमको फायदा होना चाहिए, ऐसा मैंने लिख दिया। तो जब 'मनुष्य बनो' पत्रिका मेरे पास छप के आई, मैंने पढ़ी तो दिल में ख्याल आया, फ़क़ीर चन्द ! लोग तुमको अहंकारी कहेंगे, तूने ग़लती की। अफ़सोस किया। मैं गया अलीगढ़, वहाँ एक advocate हैं

उस का नाम मैं भूल गया, अच्छा Learned (विद्वान), संस्कृत का बड़ा माहिर। वह आया। उसको मैंने बोला कि भई! तू वेद शास्त्रों को बहुत जानता है, मैंने यह ग़लती खाई, यह लिख दिया; लोग मुझे अहंकारी कहेंगे। उस वक़्त तो वह बोला नहीं, वह चला गया। शाम को वह अपनी औरत, अपने बच्चों, सब को लेके, १० रुपया, मिठाई, फल लेके आया, उसने मत्था टेका, पतञ्जलि का योगशास्त्र ले आया। उसमें महर्षि पतञ्जलि ने लिखा कि तुम से कुछ नहीं होता तो किसी वीतराग पुरुष को खोपड़ी में रखो। मायातीत या वीतराग कौन है? राग कहते हैं ताल्लुक (सम्बन्ध) को, attachment को; जो किसी चीज़ से सम्बन्ध नहीं रखता वह वीतराग है। अब जो आदमी अपने अन्दर जो शक्लें बनती हैं विचार उठते हैं, उनको सत्य मान कर उनमें बंधा हुआ है वह वीतराग नहीं है। वीतराग पुरुष वह शख़्स है जिसकी सुरत (प्रकाश और, शब्द को भी छोड़कर) केवल अपने आप में, अपनी ही ज़ात में ठहरती है। इस तरीक़े से हो सकता है किसी को मेरे ध्यान से फ़ायदा पहुँचता हो मगर मुझे उसका कोई पता नहीं

होता ; मैं अपनी बाबत यह जानता हूँ। मगर मुझे यह यक़ीन है ; एक औरत सुन्दर है, बाज़ार से जा रही है। नौजवान आदमी जिनमें काम है उसको देख के उनके मन विचलित हो जाते हैं। अगर औरत को उसके ख्याल का पता लग जाय तो वह शायद जूते भी मारे। क्यों विचलित होते हैं ? क्योंकि क़ुदरत ने, उस औरत में काम की पूर्ति का उसको यौवन या उसको नक्श-ओ-निगार (आकार, features) दिये हुए हैं। अगर वह औरत यह दावा करे कि मैं लोगों को प्रभावित करती हूँ तो वह बेवकूफ़ है क्योंकि वह चीज़ तो उसको क़ुदरत ने दी है ; वह तो God Gift है, परमात्मा की दया है। अगर फ़र्ज़ करो किसी सन्त के पास या मेरे पास कुछ है, जिसका मुझे पता नहीं, तो मैं किस बात का अहंकार करूं ! यह तो God Gift है, यह तो मालिक की दया है, सब उसका खेल है, मैं किस बात का अहंकार करूं !! नहीं समझ में आती है :—

साँच बिना सुमिरन नहीं, भय बिन भक्ति न होय।
पारस में परदा रहे, कंचन केहि बिधि होय ॥

"खौफ़ के बग़ैर"—अब देखो तो मुल्क में क्या हो

रहा है। ईश्वर का ख़ौफ तो दुनिया को यूं चला गया। तुम सोचो यह हिन्दू कौम अपने आप को कहती है ; हिन्दू, हम हिन्दू हैं। कर्म को Philosophy को ये मानते हैं और हिन्दू कहलाते हुए ये फिर कुकर्म करते हैं। मिलावट करते हैं, धोखा करते है, चारसौ-बीस करते हैं; कौन कहता ये हिन्दू हैं, ये तो हिन्दु नहीं हैं ये राक्षस हैं सब। ये तो सिर्फ एक हिन्दूपने का इन्हों ने स्वाँग बनाया हुआ है, हिन्दू नहीं हैं। जो हिन्दू कर्म को Philosophy को मानता है वह यह गुनाह कैसे करेगा। इससे यह साबित हुआ कि हमारा मज़हब, हमारा धर्म, हमारा पन्थ, सब यह लफ़्ज़ों का जाल है दरअसल में हम हिन्दू नहीं हैं। नहीं समझ में आती है मैंने क्या कहा ? उनको छोड़ो। यह तो दुनियादारी की बात है, हम महात्मा हैं क्या करते हैं ? धोखा नहीं देते दुनिया को ? "हाँ जी ! मरते समय हम ले जायेंगे।" आप नहीं कहते, चेलों से प्रोपेगण्डा कराते हैं नाम ले लो मरते समय तुमको बाबा ले जायेगा" फँसा दिये जीव ! मैं सोचता हूँ इनकी बुद्धियें कहाँ गई ? क्या किया इन मज़हब वालों ने, इन पन्थ वालों ने ? क्या किया मुझे बताओ ? दुनिया में अगर अशान्ति है, दुनिया में

कहीं सुख नहीं है तो उसका कारण यह है कि सच्चाई कहीं रही ही नहीं है। कोई जगह भी बताओ जहाँ सच्चाई है ? ये हिन्दू कहलाते हुए क्या करते हैं ? खाने में लीद डालते हैं। कैप्सूलों में धोखा, दवाइयों में धोखा ; कोई मरे कोई जीये ! ग्लुकोश में धोखा। देखो न दुनिया में क्या हो रहा है। तो यह दुनिया अगर तबाह न हो या दुःखी न हो तो और कौन होगा। हमीं तो मुस्तहक़ हैं इसके। क्या करते हैं हम !! :—

अब तो हम कंचन भये, तब हम होते काँच ।
सतगुरु की कृपा भई, मन में उपजा साँच ॥

यह। तो कबीर साहिब कहते हैं कि हम भी पहले ऐसे ही थे मगर सतगुरु की कृपा हुई। सतगुरु ने कृपा क्या की ? सत्तगुरु ने जीव को चिता दिया कि भई ! असलियत यह नहीं यह है। अगर ऐसे करोगे तुम तो ऐसा हो जायेगा, ऐसे करोगे तो ऐसा हो जायेगा। सत्तगुरु करता क्या है ? यह सब एक पाखण्ड का जाल है दुनिया में। झूठे वायदे हैं, झूठे धोखे हैं ; हां भई ! तुम नाम ले लो हमसे, चोरी करो डाका मारो, ज़िना करो, जो मर्ज़ी है करो, बस !

मरोगे तो हम तुमको ले जायेंगे। क्या एक पाखण्ड का जाल! और जीव जो हैं बेचारे यह सहारा चाहते हैं, झूठा सहारा मिले तब भी उसके पीछे फिरता है, सच्चा मिले तब भी। यह जितना खेल है सब तुम्हारे अपने ही मन के विश्वास का है, जैसी तुम्हारी आसा है वैसी तुम्हारी बासा है। समझते हो मेरी बात को!

अब यह तो मैंने अपनी आत्मा को तसल्ली देने के लिए कहा क्योंकि मैंने कल सुना, किसी ने बात बताई कि मेरे रूप ने उसकी फलाँ जगह मदद की। रात को सोचता रहा, फ़कीर चन्द! अगर तू पर्दा रखेगा तेरी ज़िन्दगी तो बर्बाद हो जायेगी, दुनिया को तूने धोखा दिया, फ़रेब दिया! अब यह तो हो गया, फिर अब मैं अपने आप में यह सोचता हूँ; कई दफ़ै बैठता हूँ कि भई! तू मरेगा, कहाँ जायेगा? कई दफ़ै! अब जब मैं अभ्यास करता हूँ तो मैं यह सोच के करता हूँ कि मैं अब मर रहा हूँ, कहाँ जाऊंगा? फिर आ जाता हूँ! मेरे बश में तो है नहीं, कब मरूंगा पता नहीं। कई दफ़ै सोचता हूँ, कुछ ख़ास नतीज़े पर नहीं आया, सिर्फ़ एक बात पर आया

हूँ :—

उत ते कोई न आइया, जासे पूछूँ जाय ।
इत ते सब कोई जात हैं, भार लदाय लदाय ।।

यह मैं अपनी आत्मा को, अपने आप को सत्संग कराता हूँ। मर के कहाँ जायेगा यह सवाल मेरे दिल में पैदा होता है; वहाँ से तो कोई मुड़ के आया नहीं जिसने कहा होवे। कई दफ़ै अकेला बैठता हूँ; सोचा करता हूँ भई! इस जन्म में आने से पहले मैं कहाँ था ? यह सोचा करता हूँ। इसका पता नहीं लगता। Theory ही है नां ! या दाता दयाल ने कहा कि तुम पिछले ज़न्म में भिक्षु थे (मैं बात कहता हूँ) मगर मेरे पास कोई सबूत तो नहीं है नां। कोई सबूत है तो मुझे बताओ ? मुझे तो कोई सबूत नहीं मिलता। अच्छा मर के कहाँ जाऊंगा, इसका भी कोई सबूत नहीं ! फिर कहां जाऊंगा ? कोई जवाब नहीं मिलता। सिर्फ एक जवाब मिलता है, वह भी अपनी अक्ल से: अपनी बुद्धि से, अपने अनुभव से, भई ! मरते समय जहाँ मेरी सुरत का ताल्लुक़ होगा वहाँ जाऊंगा। यह भी Theory है, सबूत मेरे पास कोई नहीं। कबीर साहिब कहते हैं :—

उत ते कोई न आईया, जा पूछूँ जाय।
इत ते सब कोई जात है भार लदाय लदाय ॥
उत ते सत्तगुरु आइया, जाकी मति बुधि धीर।
भव सागर के जीव को खेय लगावें तीर ॥

कहते हैं वहाँ से सत्तगुरु आया। उस सत्तगुरु की सिफ़त क्या है? उसकी बुद्धि, wisdom, समझ; धैर्यवान् है अर्थात् जो कुछ उसकी अक्ल कहती है उसमें वह satisfied है, उसको उसमें तसल्ली है कि जो मेरा अनुभव है वह ठीक है। क्योंकि मुझे अब तुम लोगों से यह तसल्ली हो गई, यक़ीन हो गया; क्या? कि मैं तुम्हारे अन्दर नहीं जाता, तुम्हारे अन्दर बाबा फ़कीर प्रकट होने वाला तुम्हारा अपना ही आत्मा है, तुम्हारा अपना ही मन है, यह यक़ीन हो गया नां मुझको! तो मेरी जो बुद्धि थी, वह धीर हो गई न! धीर के मायने धैर्यवान् हो गई न, दृढ़ हो गई न, निश्चयात्मक हो गई न, तो अब फिर मैं कहाँ जाऊंगा? अगर तो इस दुनिया के साथ attachment रखूंगा फिर तो आऊंगा। पुत्रों से रखूंगा तो पुत्रों से सम्बन्ध होगा, मन्दिर से रखूंगा तो मन्दिर में पैदा होऊंगा, तो जहाँ मेरा सम्बन्ध होगा वहीं जाऊंगा

नां ! और तो कुछ नहीं होगा !! यह ठीक है नां ! तो बुद्धि, मति धीर किसकी होती है ? मुझे पता नहीं कि कबीर साहिब की बुद्धि, मति कैसे धीर हुई, मेरी बुद्धि जैसे धीर हुई मैं वह कहता हूँ ; सिर्फ़ इस एक ख़्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता यह सब इन्सान का अपना ही विश्वास और श्रद्धा है, तो अगर मैं अपनी सुरत को अपने मन के ख़्यालों के साथ बाँध रखूंगा, दुनिया के साथ रखूंगा तो पुत्रों के साथ रखूंगा तो, दौलत के साथ रखूंगा तो, कहीं रखूंगा तो, कहीं रखूंगा तो ! तो मैं कहाँ जाऊंगा ? जैसी आसा वैसी वासा । तो फिर सत्तगुरु क्या करता है ?

उत ते सत्तगुरु आइया जाकी बुधि, मति धीर ।
भवसागर के जीव को खेय लगावें तीर ॥

मेरे दिल में एक ख्याल आता है, ओ बुड्ढे खोसट ! बेहया ! तूने अपने आप को सन्त सत्तगुरु कहा !! कितना बड़ा तुमने अनर्थ किया ! ज़ुल्म किया ! कितना अहंकार तुम करते हो !! क्या इसमें सच्चाई है ? हां है । मैं क्या करता हूँ ? जो आदमी इस मन के चक्कर में फँसा हुआ है, तरह-तरह के ख़्यालात में उलझा हुआ है, उसको सच्चा ज्ञान देकर

यह चाहता हूँ कि यह इस जाल में न फँसे और अपना इष्ट जो है वह निज रूप या अनामीधाम या अकाल पुरुष या ज़ात, वह रखे, ताकि वह भवसागर से निकल जाये। तो गुरु जिसकी बुद्धि, मति धीर है वह क्या कहता है ? मैं अपनी आत्मा से सवाल करता हूँ, परसराम ! ओ बुड्ढे ! तूने अपने आप को सन्त सत्तगुरु कहा, क्या इस अहंकार की तुझको सज़ा न मिलेगी ? सत्यप्रिय होने के नाते, जबकि मैंने इतनी सच्चाई से काम लिया तो इस सच्चाई को, मैं अपनी ज़िन्दगी के ज़ाती अनुभव के आधार पर चूँकि मेरी बुद्धि, मति धीर हो चुकी है और यह धीर, दया दाता दयाल की है मगर आप लोगों ने यह यक़ीन करा दिया कि मैं तुम्हारे अन्दर नहीं होता. कौन होता है ? तुम्हारा ही मन होता है, तुम्हारी ही आत्मा होती है ; तुमको अज्ञान है, तुम अपने मन के पीछे दौड़ते फिरते हो यह ज्ञान देकर बहैसियत-ए-सन्त सत्तगुरु, मेरी बुद्धि,मति धीर कैसे है वह मैं बयान कर रहा हूँ। ताकि ; जो कुछ मैंने अपने आप को सन्त सत्तगुरु कहा है, इसका कोई झूठा पाप मेरे ऊपर न लगे। उससे क्या होगा ? कि जो जीव मेरी बात को अच्छी तरह से समझ जायेगा वह इस मन के चक्कर में नहीं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

आयेगा। चूँकि वह मन के चक्कर में नहीं आयेगा, जब उसका अन्त समय आयेगा, कहाँ जायेगा ? ज़ात ज़ात में मिल गई। नहीं समझ में आती है, क्या मैंने कहा !:-

उत ते सत्तगुरु आइया, जाकी मति बुधि धीर।
भवसागर के जीव को, खेय लगावें तीर ।।
अब हम चले अमरपुरी, टारे टूरे टाट।
आवन होय सो आइये, सूली ऊपर बाट ।।

सूली क्या होती है ? फांसी जब दी जाती है गले में रस्सी टंग जाती है। उसका कोई सहारा नहीं रहता। पाँव भी लटकते हैं, हाथ भी लटकते हैं यानि किसी जगह वह सहारा नहीं ले सकता ! तो जिसको यह ज्ञान हो जाता है कि जो कुछ है मेरी ज़ात है, वह अपनी सुरत को अपने ही आप में, अपने ही रूप में, अपनी ही ज़ात में ठहरायेगा नां ! तो जब उसके सारे सहारे छूट जायेंगे इसको कहते हैं सूली ऊपर बाट। नहीं समझ में आती है ! बस इतना ही काफ़ी है। मगर यहाँ तक तुम लोग नहीं पहुँच सकते, यह तालीम हर एक आदमी के लिये नहीं है। नहीं है नां ? तो फिर क्या करो ? साधारण दुनिया के लिए क्या

तरीक़ा है ?

सबसे पहले अपने इख़लाक़ (चरित्र) को ठीक करो। अपने ज़ाती मतलब के लिए किसी के साथ धोखा मत करो, फ़रेब मत करो, चारसौबीस मत करो। एक बात ! फिर अगर सत्संग तुमको मिल गया है, कोशिश यह करो कि एक रूप बना लो। क्योंकि तुम वहाँ तो जा नहीं सकते ! वह जो रूप तुमने बनाया है चाहे किसी भी गुरु या राम का बनाया है, इस रूप को पूरा मानो; वह अकाल पुरुष है, वह ज़ात है। अगर तुम ऐसा मानोगे तो 'अन्त मता सो गता' के हिसाब से चूँकि तुमने अपने गुरु को या राम को या कृष्ण को या देवी को या किसी को तुमने पूर्ण माना हुआ है, सबसे ऊँचा माना हुआ है, सबका आधार माना हुआ है, तो जब तुम्हारा शरीर छूटेगा, कहाँ जाओगे ? जैसा तुम्हारा ख़्याल है वैसा तुम्हारा हाल है। इसवास्ते बार-बार कहा जाता है :—

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अंध।
दुखी होयं संसार में आगे यम का फंद॥
गुरु किया है देह को, सत्तगुरु चीन्हा नाहिं।
कहें कबीर ता दास को, तीन लोक भरमाहिं॥

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

इसवास्ते गुरु जो है यह इष्ट है, इसको पूर्ण मानो। मैं नहीं कहता तुम मुझको पूर्ण मानो। मेरे पास से तो बात समझ के ले जाओ, फिर मुझे छोड़ जाओ। मेरी बात को याद रखो, तुम मेरे सच्चे सेवक हो। और अगर मेरी बात को तुम नहीं समझते हो, मुझे पूजते रहते हो; फ़कीर चन्द, मस्तराम का पुत्र जो होशियारपुर में मानवता मन्दिर का संचालक है, अगर यह समझते रहोगे फिर तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। नहीं समझ आती है ! तो गृहस्थियों के लिए सबसे आसान तरकीब क्या है ? अपने इष्ट को पूर्ण मानो। हिन्दू धर्म को देखो तो सही ! कृष्ण अवतार थे या नहीं थे ? राम अवतार थे या नहीं थे ? उनको विष्णु का अवतार बना करके लोगों से पुजवाया ताकि जो कृष्ण का ध्यान करेंगे, अगर तो वह कृष्ण को ब्रह्म मानेंगे तो उनका फ़ायदा हो सकता है; तो अगर वह कृष्ण को गोपियों के साथ भोग करने वाला मानेंगे तो फिर कुछ नहीं। तुम विष्णु पुराण पढ़ो, वहा विष्णु को सबसे ऊंचा माना है। देवीपुराण पढ़ो, देवी को सबसे ऊँचा माना है। शिवपुराण पढ़ो, शिव को सबसे ऊँचा माना है। हरएक आदमी ने अपने

इष्ट को ऊँचा माना है और ऊँचा मानना चाहिए ! तो जब तक कोई आदमी अपने इष्ट को पूर्ण नहीं मानता, इसलिए तुम लोग जो मुझको गुरु मानते हो, तुम को मैं सच्चाई बयान किये जाता हुँ ; गुरु फ़कीर चन्द नहीं है, चूँकि तुम वहाँ नहीं पहुँच सकते इसवास्ते फ़कीर चन्द के रूप में उसको पूर्ण मानो फिर तुम्हारा बेड़ा पार है । समझती है मां ! (इन्दौर वाली माई) कि नहीं समझती ? समझते हो मेरी बात को ?

तो आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया, कोई कसर छोड़ी नहीं । मैं तो किसी पर एहसान नहीं करता, मेरे तो सत्तगुरु हैं आप । कल इसने एक ख्याल दिया, इसने कहा कि यह चमत्कार घटा, आपके रूप ने ऐसे किसी की मदद की तो मैंने कहा कि मैं अपनी आत्मा पर कोई बोझ नहीं रखना चाहता । अब मैं जानता हूँ कि मेरी इस साफ़बयानी से झौवा नहीं आयेगा, नहीं आता है तो ना सही ! जितना आता है कह चला हूँ मन्दिर वालों को, जब तक तुम्हारा गुज़ारा चलता है चलाते जाओ, नहीं चले तो अस्पताल बन्द कर दो, सब कुछ बन्द कर दो ; चलो ! मकान बना हुआ है कोई संस्था इसको ले लेगी,

Public आराम करेगी। नहीं समझ में आती है ! मैंने बहुत कुछ आप लोगों को कह दिया, अब आरती कर दो :—

वन्दनम् सत्तज्ञान दाता, वन्दनम् सत्तज्ञान मय।
वन्दनम् निर्वाण राता, वन्दनम् निर्वाणमय ।।
भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब।
आप ही हैं सिंध सद्गति, जीव जन्तु मीन सब।
आप गुरु सत्तगुरु, दया और प्रेम के भंडार हैं।
आप करता धरता हैं, करतार जगदाधार हैं ।।
ऋद्धि सिद्धि शक्ति नवनिधि, हैं चरन में आपके।
बच गया भव दुख से, जो आया शरण में आपके ।।
भक्ति दीजे नाम की, सतनाम में विश्राम दे।
राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी धाम दे ।।

सत्संग परम सन्त हज़ूर मानव दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर 20. 3. 83

सोच समझ जड़ प्रानी, तेरा नर तन बीता जात रे ॥
खान पान निद्रा में भूला, भक्ति भजन अलसात रे ।
पल में विनस जाये यह देही, ज्यों तारा परभात रे ॥
तीरथ राज समाज गुरु का, क्यों नहीं संगत जात रे ।
भूल भरम तज काम क्रोध तज, लख लख यम का घात रे ॥
भव सागर एक अगम पंथ है, त्रिय तप का उत्पात रे ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सतपद मग दरसात रे ॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यम्, मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥
तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
मानवधर्मस्य धातारं, दाता दयालस्य प्रियतमम् ।
सन्तधर्मस्य गोप्तारं फ़कीरं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

राधास्वामी !

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप, प्यारे सत्संगियो ! आज के मासिक सत्संग में मैं आपको पहले तो सद्भावना देता हूँ। चैत्र मास है, चैत में चेतावनी दी जाती है और कहते हैं चैत मास में नया खून बनता है। इसमें आपका खून आज से नया बन जाये ऐसी मेरी भावना है अर्थात् सत्संग में आने से आपको इतना लाभ हो कि आपका जो आन्तरिक ज्ञान है वह निखर आये और आपको एक नवीनता (नया-पन) महसूस होने लगे।

मनुष्य तन में समझने की मुख्य बात यह है कि असल में आप कौन हैं। असल में आप सत्य रूप हो, जैसे कि दाता दयाल जी महाराज ने परम दयाल जी को चिताया :—

रूप तेरा अति प्यारा फ़कीरा, रूप तेरा अति प्यारा।
तू सत् चित् आनन्द की मूरत, तू तीनों से न्यारा।।

चिताया किसको जाता है ? याद किसको दिलाया जाता है ? याद तो वह चीज़ दिलायी जाती है जो आपके अन्दर पहले ही मौजूद है। राधास्वामीमत या सन्तमत को हमने मानवधर्म कहा है। मानवधर्म इसलिए कहा है कि एक सत्य है,

सत्य का धर्म है और वह मानव स्वयं ही सत्य है। इस नामकरण से एक तो इस राधास्वामीमत या सन्तमत की सच्चाई बयान की जाती है और दूसरा इस मत या इस शैली या इस पद्धति या इस रास्ते या इस पन्थ का जो उद्देश्य है वह भी समझ में आ जाता है। राधास्वामीमत का मतलब कोई फ़िरका नहीं है। वैसे तो मनुष्य अपने आप में पूर्ण है। यही वेदों और उपनिषदों में भी लिखा है। जिसने यह लिखा है उसको अनुभव हुआ तब उसने लिखा ! उसने अनुभव करके किताबों में लिख दिया, आप उसको पढ़ो, उसका पाठ करते जाओ, यत्न करते जाओ, यत्न करते जाओ परन्तु आपको कैसे पता चलेगा कि आप सत्य रूप हो ? इसलिए इस सबसे ऊँचे और श्रेष्ठ परन्तु कठिन विषय को सहज बनाने के लिए ही यह सन्तमत या राधास्वामीमत इस दुनिया में आया है।

परम दयाल जी महाराज को नमस्कार करते समय मैंने 'मानवधर्मस्य धातारं' अर्थात् मानवधर्म का आधार कहा है। यह मानवधर्म, सन्तमत या राधास्वामीमत कोई नया मत नहीं है; पहले भी

था, अब भी है, आगे भी रहेगा। पहले यह सैन-बैन में था। सैन-बैन में इसलिए था कि यद्यपि यह सच्चाई तो उपनिषदों में भी लिखी हुई है परन्तु जिस वक़्त उपनिषद् लिखे गये थे उस वक़्त वातावरण और था। लोग ज्ञान के लिए युवावस्था में भी और संन्यास से पहले वानप्रस्थ हालत में भी आश्रम में जाते थे। उस वक़्त जो पढ़ाई भी होती थी वह इसी ज्ञान को देने के लिए होती थी कि तुम पूर्ण हो।

उपनिषद् है क्या ? उप का मतलब निकट, निषद् मायने बैठना अर्थात् गुरु के निकट बैठना। नज़दीक बैठने का मतलब क्या है ? सत्संग। मैंने आज मंगलाचरण में कहा है "ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः"। काँसे या पत्थर की मूर्ति भी पूजें तो इसके जरिये भी आपकी इच्छा तो पूरी हो जायेगी लेकिन अगर ज़ीती-जागती गुरु की मूर्त्ति सामने बैठी हो तो और भी अच्छा है। पिछले ज़माने में कई वर्षों तक गुरु के पास बैठना पड़ता था तब जाकर ज्ञान होता था कि मैं कौन हूँ, तब जाकर पता चलता था कि मैं सत् हूँ, चित् हूँ और आनन्द हूँ। ये बातें जो उपनिषदों में लिखी हैं वे तो बिलकुल सही हैं परन्तु वह अनुभव पर आधारित

थीं और इस ज्योतियों की ज्योति को आप के अन्दर सुलगाने वाला खुद ज्योतिर्मय होता था तब ही यह ज्योति से ज्योति सुलगती है। इसीलिए कहा गया है कि यह सीना-ब-सीना का ज्ञान है।

उपनिषद् के इस मन्त्र को परम दयाल जी महाराज बहुत पसन्द करते थे :—

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

सब का आधार, सर्वाधार, अविनाशी, परमतत्त्व, अलख, अगम, अनामी, दयाल, परब्रह्म, परमात्मा, जो कुछ भी आधार है वह अपने आप में पूर्ण है। आधार तो है ही! इसको तो सब मानेंगे। क्योंकि बिना आधार के धार नहीं है और धार में ही जगत् है। धार मैदूद (सीमित) होती है। धार में ही शरीर हैं, मन है, बुद्धि है, काल हैं, माया है और हमारी सुरत है। सुरत हमारी आत्मा की लौ है। जब सुरत सार शब्द की तरफ़ लगती है तो उस वक़्त पता चलता है कि मैं अविनाशी हूँ; हमारा असली आपा जो है वह सत्, चित्, आनन्द से भी परे अविनाशी तत्त्व है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

पुराने ज़माने में इसी ज्ञान के लिए शिष्य गुरु के पास जाता था। परिश्रम करता, बड़ी श्रद्धा से गुरु के पास बैठता, टिकटिकी बांध कर देखता, सत्संग सुनता और फिर मनन करता था। मनन से मतलब बुद्धि, विवेक और विचार से है। जो शक़ रह जाते, बाद में वह बड़ी नम्रता से प्रश्न करता था तब वर्षों के बाद सभी शक दूर होकर उसको असलियत का ज्ञान होता था। गुरु को टिकटिकी बांध कर लगातार देखने का मतलब यह है कि जो संस्कार गुरु के हैं, जो ज्ञान उसका है, जो हालत उसकी है अगर ध्यान लगाकर बैठा जाये तो वही हालत उसमें पैदा हो जाये! मैं तो कहता हूँ कि बिना ध्यान के भी घर के अन्दर साथ रहने से एक दूसरे की आदतें आ जाती हैं। किरणें चलती हैं।

अधिकारी जो ज्ञान लेनें के लिए आता है उसके लक्षण होते हैं। अधिकारी का सबसे बड़ा लक्षण सच्चाई है। जो आदमी सच्चा है वही अधिकारी हैं। मैंने पहले भी आपको एक उदाहरण दिया था कि एक शिष्य गुरु के पास गया और कहा महाराज! मुझे आप शिक्षा दीजिये, आश्रम में मुझे जगह दीजिये। गुरु ने पूछा कि यह बता कि तू किसका बेटा

है और तू किस खा़नदान का है? उसने कहा महाराज ! मैं जानता नही हूँ, मैं अपनी मां मे पूछ के आता हूँ। माँ के पास गया। उसका नाम जब्बाला था। पूछा कि मेरे पिता का क्या नाम है? मेरा खा़नदान क्या है? तो उस मां ने कहा भई ! सच्ची बात तो यह है बेटे ! कि जब मैं युवावस्था में थी तो पैसे के लिए बहुत से घरों में नौकरानी का काम करती थी, और मेरा अनुचित सम्बन्ध कइयों से हुआ और उसके बीच में तू पैदा हो गया। मुझे पता नहीं, मैं बता नहीं सकती लेकिन मैं जब्बाला हूँ तेरा नाम सत्यकाम है इसलिए तू सत्यकाम जाबाल हो गया। यह बात सुनकर वह गुरु के पास आया। गुरु ने फिर पूछा कि भई ! तेरा कौन सा खा़नदान है? तो उसने वही की वही बात सुना दी कि मेरी मां ने ऐसा कहा कि युवावस्था में कई सम्पर्क हुए, वह जानती नहीं है कि मेरा पिता कौन है परन्तु वह जब्बाला है, मैं सत्यकाम हूँ तो मैं सत्यकाम जाबाल हूँ। गुरु ने कहा बहुत ही अच्छा ! तू ही सच्चा ब्राह्मण है !! तूने सच्चाई को छुपाया नहीं ! सच्चाई पर चलना, सच्चाई को मानने के लिए तैयार होना ही अधिकारी पना है। और उसको जब ज्ञान दिया वह ज्ञान कई

वर्षों तक चला। सत्यकाम जाबाल ने कई उपनिषद् लिख डाले जिस में उसने बताया है कि परमतत्त्व क्या है। वो जरा कठिन शब्दों में है मैं उसको सरल बना के आपको बताता हूँ कि उपनिषदों के अन्दर तीन चीज़ें हैं। एक तो यह कि वह आधार क्या है जहाँ से हम आये हैं, उसका क्या स्वरूप है ? दूसरे वह कैसे समझा जाय ? तीसरे मैं कौन हूँ और मेरा उस परमतत्त्व से क्या सम्बन्ध है ?

ख़ैर ! लम्बी बात नहीं करता ; मैं बताना चाहता हूँ कि वह आधार निर्गुण भी है, सगुण भी है। सत, रज तम उसके तीन गुण हैं। जो आधार है उसी से सब कुछ बना है और वह सबके अन्दर रम रहा है। वह सुनता है, बोलता है, अनुभव करता है और वह सबका जीवनकर्त्ता है। उसे देखा नहीं जाता लेकिन देखना उसके बिना नहीं होता। उसे सुना नहीं जाता, उसे छुआ नहीं जाता लेकिन सुनने और छूने के अन्दर वही होता है। वह अनुभव करता है, वह साक्षी है और उसके बारे में शक हो ही नहीं सकता :—

हर चीज में मौजूद है और नजर आता नहीं।
योग साधन के बिना उसे कोई पाता नहीं॥

सम्बन्ध तो यह है कि आप उसी के अंश हो। बुद्धि उसी के सहारे है लेकिन बुद्धि उसे नहीं जानती ; सत् बुद्धि से जाना जाता है। जो जान गया उसके मन के अन्दर समता व प्रसन्नता आ जाती है। वही समता व ख़ुशी दिलाने के लिए गुरु ज्ञान देता है। हर चीज़ पर शक किया जा सकता है लेकिन एक बात पर शक नहीं किया जा सकता कि मैं शक कर रहा हूँ। मैं शक करने वाली हस्ती हूँ इस पर कोई शक नहीं कर सकता। अगर भ्रम करने वाला नहीं हो तो भ्रम ही नहीं हो सकता ! तुम्हारा अपना आपा वह है जिस पर शक किया ही नहीं जा सकता। लोग क्या ढूँढ़ते हैं ? दरअसल लोग ख़ुद को ही ढूँढते हैं। अगर किसी को पूछो कि तुमको क्या चाहिए ? वह कहेगा लाखों रुपये चाहिए, पुत्र चाहिए, यह चाहिए, वह चाहिए। यदि मैं पूछूँ कि तुमको ये चीजें क्यों चाहिएं तो उसका जवाब होगा कि इन चीज़ों से मुझे ख़ुशी मिलती है, प्रसन्नता मिलती है। इस पर अगर आप ग़ौर करो तो स्पष्ट होगा कि हर व्यक्ति अपने आप को ही ढूँढ़ता है।

सन्तमत कहता है कि यह बात जो वेदों और उपनिषदों में लम्बी-चौड़ी कही गई है और बड़ी कठिन

है उसके लिए चार सीधे तरीक़े हैं :—

एक जन्म गुरु भक्ति कर, दूसरे जन्म नाम।
जन्म तीसरे मुक्ति पद, चौथे में निज धाम।।

बिलकुल सीधा तरीक़ा है कि सत्संग में आके आप गुरुमूर्त्ति में ध्यान जमाओ और ध्यान भी बगुले वाला ध्यान हो अर्थात् सत्संग के अन्दर ऐसा ध्यान हो कि जब कोई बात तुम्हारे मतलब की आये तुम उसे झट पकड़ लो। नाम भी गुरु के आधार होता है, वह जानता है कि किस तरीक़े से नाम दिया जाये! जन्म से मतलब यह नहीं कि और जन्म लेना है, मतलब यह है कि कुछ समय के लिए सत्संग करो, फिर नाम को पकड़ कर साधन करते हुए इसी जन्म में मुक्ति को हासिल कर लो और निज धाम को पाओ। तो आज का शब्द था :—

सोच समझ जड़ प्रानी तेरा नर तन बीता जात रे।।

तो चैत के महीने की यह चेतावनी है कि शरीर तो चला ही जायेगा, तुम अपने समय को नष्ट न करो। दुनिया में जहाँ सब कामों को वक़्त देते हो कम से कम और कुछ नहीं तो आधा घण्टा' पौण घण्टा रोज़, मालिक, जिसको पाने के बाद आपकी सभी

समस्याएँ सुलझ जायेंगी उसको याद करने में तो होना चाहिए। सत्संग को समय देना चाहिए :—

खान पान निद्रा में भूला, भक्ति भजन असलात रे।
पल में विनस जाये यह देही, ज्यों तारा परभात रे॥
तीरथ राज समाज गुरु का, क्यों नहीं संगत जात रे।

तीर्थ करना ज़रूरी है क्योंकि वहाँ पर महापुरुषों की किरणें होती हैं लेकिन दाता दयाल कहते हैं कि सबसे अच्छा तीर्थों का राजा जो है वह गुरु की संगत है, जहाँ पर सत्तगुरु सच्चाई का ज्ञान दे रहा है। सत्संग को तीर्थों का राजा इसलिए कहा है कि किसी सच्चे सत्तगुरु का एक घड़ी का सत्संग लाखों वर्षों की तपस्या से ज्यादा लाभ देने वाला है :—

भूल भरम तज काम क्रोध तज,
लख लख यम का घात रे॥

पहला भ्रम तो हमारा यह है कि हम समझते हैं कि जो मर गया सो मर चुका, हम हज़ारों साल तक जीयेंगे। यह बहुत बड़ी भूल है।

काम का मतलब कामना या मन की भ्रमणा से है; सिर्फ़ यही काम नहीं है जो स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध होता है। काम जो है, इसी काम को अगर तुम पवित्र

रूप से प्रेम में परिवर्तित कर दो तो वह तो गृहस्थ जीवन में बहुत ऊँचा है। काम, क्रोध हमारे अन्दर दो विशेष शक्तियां हैं। परम दयाल जी महाराज ने कई बार आपको कहा कि तुम्हारे अन्दर काम नहीं तो तुम नपुंसक हो। काम जब प्रेम में परिवर्तित हो जाता है तो वह पवित्र हो जाता है। इसी तरह से क्रोध भी अपने आप बुरा नहीं है; क्रोध भी शक्ति है। बिना क्रोध के आदमी नैतिक नहीं हो सकता। अगर क़ानून सख्त नहीं है तो मुल्क में अमन नहीं रह सकता। मनुष्यता धर्म की यही परिभाषा है कि आप मन, वचन, कर्म से किसी का दिल न दुखायें तो आप धर्मात्मा हैं: कोई ज़रूरत नहीं है कि यह करूँ या वह करूँ। जो मन, वचन, कर्म से अपनी तरफ से किसी को दुःख नहीं देता वही सत्य और प्रेम पर चल रहा है।

अपने आप में कामना भी बुरी नहीं और अपने आप में काम भी बुरा नहीं है और क्रोध भी बुरा नहीं है मगर ऐब हमारे अन्दर उत्पाती रजोगुण से पैदा होते हैं। तो इनको कौन जीतता है ? जिसको यह ज्ञान हो जाये :—

इन्द्रियाणि पराण्याहुरि न्द्रियेभ्य: परं मन: ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धे: परतस्तु स: ॥

पाँच ज्ञान इन्द्रियों और पाँच कर्म इन्द्रियों से ही सारा काम चलता है। जो आदमी इनको अपने मन के क़ाबू में रखता है; इनका इस्तेमाल तो करेगा ! मगर इनको अपने क़ाबू में रखता है वह काम, क्रोध पर भी विजय पा सकता है। ज्ञान इन्द्रियाँ सूक्ष्म हैं, मन इन्द्रियों से ज्यादा सूक्ष्म है। ज्ञान इन्द्रियों का काम तब होता है जब मन साथ होता है। मन अगर काम इन्द्रिय की तरफ़ झुक गया तो परमात्मा से अलग होता है। मन अगर बुद्धि व आत्मा की तरफ़ गया और बुद्धि से ऊँचा चला गया तो मन दोनों तरफ़ जा सकता है। मन के बिना आप बैठे हुए हैं, देख रहे हैं, मेरी बात सुन रहे हैं, अगर आपका ध्यान बाहर है तो जो मैंने कहा है आप नहीं सुनेंगे। बुद्धि का मतलब है विवेक, विचार। बुद्धि जो समझ देती है वह मन पर भी नियन्त्रण कर सकती है। अब मुझे प्यास लग रही है, मन कहता है पीओ, लेकिन बुद्धि उसे रोक सकती है। और सत् बुद्धि ही के द्वारा हम अपनी सुरत नीचे या ऊपर लगा सकते हैं। हमारी ज्ञान इन्द्रियें, हमारा काम, हमारा क्रोध इन सब पर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

विजय पाने के लिए हम अपनी सुरत का इस्तेमाल कर सकते हैं। इधर से अचिन्तन करके, इन पर नियन्त्रण करना और अपनी तवज्जह को बुद्धि से परे जो तमारे अन्दर कभी नाश न होने वाला श्रेष्ठ तत्त्व है उधर लगाना, यह हमारे हाथ में है। इन्द्रियाँ अपने आप में ख़राब नहीं है।

मनुष्य के अन्दर सबसे ज्यादा शक्ति यही है कि वह काम, क्रोध का दमन करे मगर दमन जो है यह आखिरकार ख़तरनाक है। दमन से ज्यादा अच्छा यह है कि शक्ति अच्छे रास्ते पर लगायें जहाँ इनका प्रयोग हो सके। इसको कहते हैं शक्ति,मार्ग आन्तरीकरण। तो काम और क्रोध दोनों का मार्ग आन्तरीकरण हो सकता है। काम का मार्ग आन्तरीकरण यह है कि वह गृहस्थ में आ जायें। आपको बिलकुल Practical (क्रियात्मक) बात बता रहा हूँ, इस पर अमल किया जा सकता है। उत्तम सन्तानोत्पत्ति के लिए इसका सदुपयोग किया जाये। गृहस्थ आश्रम बहुत ज़रूरी है। इसी से संसार चलता है। माताएँ हमारे राष्ट्र को बना सकती हैं। तो गृहस्थ आश्रम में प्रेम के रूप में उसका प्रयोग किया जाये तो वह

प्रेम, मनुष्य का प्रेम, इश्क-ए-मजाज़ी जो है वह इश्क़-ए-हक़ीक़ी अर्थात् मालिक के प्रेम में बदल सकते हैं। कोई बच्चा बहुत लड़ाकू होता है तो लोग कहते हैं यह तो बहुत ख़राब है। उसकी इस शक्ति का उपयोग में लाना यह है कि उसे खिलाड़ी बना दो, बहुत अच्छा खिलाड़ी हो जायेगा ; काबू में आ जायेगा। फ़ौजी बन जायेगा, सेनापति बन जायेगा। इस तरह मार्ग आन्तरीकरण करना बहुत सहल है।

लेकिन अच्छे आदमियों के अन्दर यह शक्ति दूसरे रास्ते पर चली जाती है और सन्तमत या मानव धर्म के अन्दर विशेषत: काम और क्रोध की शक्ति जो लगातार बह रही है इसका प्रयोग करके हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। काम और क्रोध की शक्ति को बदलने का सबसे ऊँचा तरीक़ा जो है वह है सुरत-शब्द योग। अगर मालिक की दया शामिले हाल है और किसी सच्चे सत्गुरु की कृपादृष्टि हो जाये तो सत्संग करके अपनी शक्ति को ज्ञान से दया और मालिक के प्रेम में परिवर्तित करके, इन्सान मालिक का सच्चा भक्त बन सकता है। सन्तों ने जितनी कविताएँ लिखी हैं ये काम का ही रूपान्तर

हैं। परम दयाल जी सत्संग में कहते थे कि मेरी काम की वृत्ति ज्यादा थी। महात्मा गाँधी ने अपनी काम की वृत्ति का रूपान्तर करके इसे जगकल्याण में लगा दिया तब दुनिया में सबसे बड़े विख्यात आदमी बने। ये सब बिलकुल ऐसी ही बातें हैं जैसे हम पानी को बाँध लगा और नहरें बना के, नियम में लाकर इसे उपज के लिए प्रयोग करते हैं और भाप बनाकर इसी से ईंजन चलाने का भी काम लेते हैं। बेहतर यह है कि काम, क्रोध का दमन मत करो बल्कि इनको परिवर्तित कर दो, इससे तुम्हारा कल्याण होगा।

भव सागर एक अगम पंथ है, त्रिय तप का
उत्पात रे।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सतपद मग
दरसात रे॥

भवसागर क्या है ? भव है, होना। ज़ो चीज़ अपने आप में प्रकट होने से शब्द और प्रकाश बन जाती है प्रकाश के बाद वह ख़्याल बन जाती है, विचार बन जाती है, विचार के बाद शरीर बन जाती है, वह परमतत्व ही है ; यह भव उसी का है। जव तक भव में है, तब तक शरीर, मन और आत्मा में भी है, सत

रज, तम भी तो इसके अन्दर दुःख और सुख है। आत्मा के अन्दर अन्दरज़रूर है लेकिन शान्ति नहीं है। शान्ति के लिए सीधा सत्तपद का रास्ता है। सरल तरीक़े से बता दिया कि हम जिस तरह से आये हैं उस तरह से शरीर, मन और बुद्धि को धीरे-२ लयेट करके प्रेम और भक्ति के आसान तरीक़े से सुरत-शब्द योग के द्वरा चलें। इसके लिए हमें सत्संग और सत्तनाम ज़रूरी है। इस तरह हम अपने परमधाम पर पहुँच सकते हैं। राधास्वामी का मतलब यहाँ यही है कि परमतत्त्व ने आकर के कई बार हमें चेतावनी दी; उस चेतावनी को सुनना चाहिए। इन शब्दों के साथ मैं आज का, चैत मास का सत्संग समाप्त करता हूँ। मेरी हार्दिक भावना है कि आप सुखी हों, आन्नदमय रहें और आपकी जो इच्छाएँ हैं मालिक उन इच्छाओं को पूरा करे। आपके लिए यह दिल से दुआ निकल रही है।

परम सन्त हज़ूर मानव दयाल जी महाराज का टूर प्रोग्राम दशहरे से पहले और दशहरे के बाद

तिथि	स्थान	पता
24,25,26-9-83	हिसार	श्री विजय नरेश नेगी S.S.P. हिसार टेलीफोन न: 2306
27-9-83	मुलाँ पुर चण्डीगढ़	श्री त्रिलोक चन्द जी ठेकेदार कोठी न: 4 सैक्टर 19 A टेलीफोन न: 28258.
10-10-83	बनवारीपुर	श्री जय सिंह त्यागी
11-`0-83	मेरठ	श्री आर. के. गुप्ता 20 A B पटेल नगर मेरठ
12,13,10-83	मोदीनगर	(i) श्री सुभाष चन्द्र गुप्ता (ii) श्री राम चन्द्र सुनेजा दयाल प्रोपर्टी डीलरस (iii) श्री एस. डी. शर्मा क्वार्टर न: 2 टीचरस कालोनी मोदीनगर
14-10-83 to 16-10-83	देहली	(i) सलवान स्कूल (ii) श्री आनन्द दयाल जी महाराज दुकान न: 106 के पीछे शंकर रोड मार्किट न्यू राजेन्द्र नगर न्यू देहली टेलीफोन न: 583230

उपरिलिखित प्रोग्राम के बाद का प्रोग्राम अक्टूबर की 'मानव मन्दिर' पत्रिका में विस्तारपूर्वक दे दिया जायेगा। इस प्रोग्राम में बिलारी, सरसोंहेड़ी, उदयपुर भीलवाड़ा इत्यादि स्थान शामिल किये जायेंगे।

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियों :

राधास्वामी, परम दयाल जी सहाई !

मैं आपको सदा की भाँति इस महीने की भी सद्भावना भेजता हूँ और सच्चे दिल मे चाहता हूँ कि मालिक आपको स्वस्थय, सम्पत्ति तथा शान्ति दें ।

मेरे विदेशी दौरे के कारण पिछले तीन महीने से मानव मन्दिर की छपाई लगातार बहुत ही बुरी हो रही है। मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है । मेरे परम गुरु, परम दयाल जी महाराज की सबसे बड़ी इच्छा यही रही कि चाहे मानवता मन्दिर में हस्पताल रहें या न रहें, स्कूल रहे या न रहे, लेकिन उनके सन्देशों को विश्व भर में पहुँचाने के लिए प्रकाशन के काम में कोई कमी नहीं आनी चाहिए। मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है कि मेरे परम गुरु की इच्छा के विरुद्ध मानव मन्दिर को छपाई की ओर बहुत ही लापरवाई की गई है। जिन २ सत्संगियों तथा पाठकों

को मैं मिला सभी ने मेरा ध्यान इस लापरवाही की ओर दिलाया, खासकर विदेशी पाठकों को इस प्रकार की छपाई से बहुत ही दुःख हुवा ।

परम दयाल जी महाराज कोई एक मामूली सन्त नहीं थे। उनके सन्देशों को विष्व भर में फैलाने के लिए, जितना भी प्रकाशन पर खर्च किया जाय, उतना ही कम है। परम दयाल जी के असूलों पर चल कर जगत् का कल्याण हो सकता हैं।

परम दयाल जी महाराज के एक अति प्रिय शिष्य श्री विश्वामित्र जी मराज जी जो कि वैस्ट इन्डीज़ के निवासी हैं उनकी इच्छा है कि परम दयाल जी के सन्देशों को संसार भर की भाषाओं में छपवाना चाहिए और अति सुन्दर छपाई से छपवाना चाहिए। इस शुभ काम को पूरा करने के लिए उन्होंने आर्थिक सहायता देने की भी इच्छा प्रकट की है। जब विश्वामित्र जी मुझे जुन में क्लीवलैण्ड में मिलने के लिए आए तो उन्होंने छपाई के सुधार में जल्द हो ठोस कदम उठाने की प्रार्थना की! मैंने उन्हें वचन दिया कि भारत पहुँचते ही मैं छपाई में शीध्र ही सुधार करूंगा। परन्तु पिछले एक महीने से मैं अपने

बड़े पुत्र अरुण की शादी में व्यस्त रहा और इस महीनें भी छपाई ठीक नहीं हो सकी। छपाई को सुधारते २ लगभग एक दो महीने और लग जायेंगे। इस छपाई में कमियों का ज़िम्मेवार कोई भी क्यों न रहा हो, मैं प्रत्येक सत्संगी तथा पाठक से इस कमी के लिए क्षमा चाहता हूँ और प्यारे सत्संगियो ! मैं आपको वचन देता हूँ कि परम पूज्य परम दयाल जी के असूलों को धीरे २ दुनिया में अच्छे प्रकाशन के द्वारा फैलाऊंगा। अगले महीने से मानव मन्दिर को चाहे किसी प्रकाशक से भी क्यों न छपवाना पड़े हम इस कमी को पूरा ज़रूर करेंगे। इस समय दुनिया को मानवता के असूलों पर चलने की जितनी ज़रूरत है पहले कभी नहीं थी। इस माँग को पूरा करने के लिए ही परम दयाल जी नें मुझे यह काम सौंपा था।

मुझे उम्मीद हैं कि आप सब ने मानव मन्दिर पत्रिका को अपने २ पते पर जारी रखने के लिए सम्पादक महोदय को पत्र लिख दिया होगा। यदि किसी कारण आपके पास मानव मन्दिर पत्रिका नहीं पहुँच रही, तो कृपया संम्पादक महोदय को अपना ठीक-2 पता लिख कर मानव मन्दिर को जारी रखने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

के लिए लिखें। हम शीघ्र ही नई लिस्टें बना रहे हैं उनमें आपका ठीक -२ नाम तथा पता होना बहुत ज़रूरी है।

जहाँ तक मानव मन्दिर के अंग्रेज़ी विभाग की बात है, हम एक दो महीने में अंग्रेज़ी का मानव मन्दिर बिलकुल अलग स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित करवायेंगे। क्योंकि अंग्रेज़ो की मानव मन्दिर पत्रिका विशेषकर विदेशियों के अनुरोध पर प्रकाशित करने का इरादा है, इसलिए उसकी छपाई अच्छे प्रकाशक से कराने का विचार है। अंग्रेज़ी मानव मन्दिर हम बहुत ही कम छपवायेंगे। पहले की भाँति हिन्दी मानव मन्दिर सबको मिलता रहेगी। जिन सत्संगियों को हिन्दी नहीं आती, वे अंग्रेज़ी की मानव मन्दिर पत्रिका मगाने के लिए पत्र लिखें उनको हिन्दी वाली मानव मन्दिर नहीं भेजी जायेगी। आप अपना पत्र संम्पादक महोदय को लिखिए।

चौदह अगस्त के मासिक सत्संग में बहुत से सत्संगी बाहर से भी आए थे। उनके उत्साह को देख कर मुझे बहुत ही ख़ुशी हुई। मेरी यह दिली इच्छा है कि मेरे प्यारे सत्संगी अधिक से अधिक संख्या में

होशियारपुर आया करें। मेरे परम गुरुदेव का यह मानवता मन्दिर किसी तीर्थ स्थान से कम नही है। हां मेरे प्यारे सत्संगियो ! पिछले सन्देश में मैंने

एक जन्म गुरु भक्ति कर, जन्म दूसरे नाम।
जन्म तीसरे मुक्ति पद, चौथे में निज़ धाम ।।

पद्य पर व्याख्या करने का वादा किया था। अतः उस वादे के मुताबिक अब इस पद्य की व्याख्याकरूँगा मैंने पहले भी आपको बताया था कि जन्म शब्द का अर्थ यहां पूरा जन्म नहीं बल्कि कुछ समय है। सन्त-के ऊपरोक्त चारों सोपान सनातन धर्म के ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास, चार आश्रमों की सरल व्याख्या हैं सत् सनातन धर्म तथा सन्तमत दोनों के मु‹ ाबिक हर एक व्यक्ति का लक्ष्य उस परम तत्त्व या निज धाम में मिल ज़ाना है; जहाँ से हम आये हैं। परन्तु इस ऊँची से ऊँची हालत पर पहुँचने के लिए हमें चार आश्रमों से गुज़रना पड़ता है। अन्त में ही मोक्ष या निज धाम या परम तत्त्व में मिल जाना ही जीवन का लक्ष्य है।

सन्त मत के मुताबिक निजधाम पर पहुँचने के लिए गुरु भक्ति को पहला कदम माना गया है और गुरु द्वारा सत्संगों का बहुत महत्त्व है। पिछले जन्मों के अनेकों अच्छे तथा बुरे कर्मो के कारण मनुष्य इस सच्चाई को भूल जाता है कि उसका असली रूप यह

शरीर, यह मन, यह बुद्धि या अहंकार नहीं है, बल्कि उसका असली रूप अविनाशी तत्त्व है। इस बात का ज्ञान उसे बाहरी गुरु से ही मिलता है और वह अपने आपे को पहचान लेता है। जिस ज्ञान दाता गुरु से इस अविनाशी तत्त्व की सच्चाई का ज्ञान होता, है उस गुरु को प्यार करना बाहरी गुरु भक्ति है। परन्तु असली गुरु भक्ति वह है, जिसके मुताबिक शिष्य गुरु के वचनों को सुन कर, उन पर विचार करे, विचार करने के बाद, उसका सार निकाले और बाद में उस सार रूपी मक्खन का आहार करे यानि कि उसे अपने जीवन पर लागू करे।

किसी भी सत्संग को सुनने वाले पर, उस समय तक कोई भी असर नहीं पड़ सकता, जब तक कि वह गुरु के वचनों को सुन कर उन पर अम्ल नहीं करता। मैंने होशियारपुर में रह कर पिछले दो वर्षों में यह अनुभव किया है कि भारत तथा विदेशों में हजारों ऐसे सत्संगी हैं, जिन्होंने परम दयाल जी के चन्द सत्संगों को सुन कर परम दयाल जी के मानवता के असूलों को अपने जीवन में उतारा है। परन्तु मैंने यह भी अनुभव किया है कि परम दयाल जी के निकट रहने वाले बीस-2 पच्चीस-2 सालों तक निकट रहने वाले बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं, जिन पर उनके सैंकड़ों सत्संगो का भी प्रभाव नहीं पड़ा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

यदि उन पर सत्संगों का प्रभाव पड़ता, तो वे लोग मानवता के 'शिव संकल्प मस्तु' के असूल पर चल कर सच्चे भक्त का नमूना बन जाते। इस हालत के बाद ही वे नाम के अधिकारी बन सकते हैं। भक्ति की हालत में रहने वाले मनुष्य का सबसे बड़ा लक्षण यह होता है कि वह गुरु की आज्ञा का पालन करने वाला हो। सच्चा गुरु वह होता है; जो अपने हर एक शिष्य को उसकी फ़ितरत के मुताबिक खास किसम का काम या खास किसम की सेवा करने की सलाह देता है। उसी काम या सेवा को बिना किसी स्वार्थ के निभाने से ही शिष्य का मन एक जगह टिक जाता है। जब तक मन टिकता नहीं यानि कि जब तक मन चंचल रहता है, तब तक शिष्य नाम दान का अधिकारी नहीं है अत: नाम दान की पहली हालत भक्ति है और दूसरी हालत का नाम, नाम या मन्त्र का जाप करते-2 अपने आप में लीन हो जाना या खो जाना है।

गुरु भक्त सत्संग में टिकटिकी बान्ध कर गुरु पर ध्यान लगाता रहे, तो इस साधन से वृत्ति बाहर से हट कर गुरु मुखता में बदल जायेगी और इसके साथ ही साथ इस साधन से शिष्य अपनी आंखों के द्वारा गुरु की किरणों को भी खींचेगा। इस प्रकार गुरु भक्ति शिष्य को उस सच्चे नाम की ओर ले जाने में मदद देगी, जिसको पाकर, वह हर किसम के सुख

और दु:ख से आज़ाद रहेगा। इस संदेश में मैंने नाम दान के चार दर्जों में से केवल पहले दर्जे, भक्ति की ही व्याख्या की है और सीधे साधे शब्दों में उसका मतलब बताने की कोशिश की है। अगले मासिक सन्देश में मैं 'नाम', 'जीवन्मुक्ति' और 'निजधाम' के दर्जों पर प्रकाशडालूँगा। इन शब्दों के साथ मैं फिर एक बार आप सबको इस महीने की शुभ कामना देता हूं और सच्चे दिल से चाहता हूं कि आप शरीर से स्वस्थ, मन से खुश और आत्मा से आनन्दित रहें। सब को राधास्वामी।

आपका फ़कीरमय

मानव

शोक समाचार

सब सत्संगियों को बड़े खेद के साथ सूचित किया जाता है कि परमसन्त परमदयाल जी महाराज के परमभक्त श्री बी. बी. भटनागर जी की धर्मपत्नी का नं०6 ब्यूटी एवेन्यू, जेल रोड अमृतसर में स्वर्गवास हो गया है।

मानवता मन्दिर परिवार उनके इस असामयिक देहावसान पर दु:ख प्रकट करता है तथा उनके परिवार वालों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता है।

सैक्रेटरी

वन्दनम्

चरण शरण की वन्दना, नित कोइ और न काम ।
गुरु बसो चित्त आय मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस ।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ।।
रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय ।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
18-9-83 को होगा ।

★★★

Regd. No. 2636574 SEPTEMBER 10th 1983
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

283 Sh. A. Hnmanth Rao
H. No. 10-3-194/8 Humayun
Nagar Hydrabad A. P.
Pin—500028

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)